M.A. Sem-II Paper — CC-5

01

प्राकृत साहित्य का इतिहास

Q-1 चरित काव्य की परिभाषा लिखकर प्राकृत प्रबन्ध का प्रारूपों का विवेचन करें।

Ans- चरित काव्यों का प्रणयन प्राकृत कवियों ने किया है। संस्कृत के चरित काव्यों का मूलस्रोत जिस प्रकार वेद है, प्राकृत के चरित काव्यों का मूलस्रोत उसी प्रकार आगमन साहित्य है। वस्तुतः चरित काव्य प्रबन्ध की ही एक रूप योजना है। जहाँ पात्र पौराणिक-ऐतिहासिक है और कालक्रम के तिथिगत एवं तथ्यगत ब्योरा से पुष्ट है। जीव धर्म की रसानुवर्ती प्रज्ञा और तीव्र भावना के चलते पात्रों के शील रूचि, रस, अनुराग और सार्थकता का समावेश होता है और चरित काव्य की परम्परा आरम्भ हो जाती है। चरित काव्य भवितव्यता की कोटि में परिगणित है, वे मात्र भूत काव्य नही। मात्र भूत से अभिप्राय विचित्र और कूतुहलवर्धक घटनाओं के श्रृंखला क्रम से है। केवल होना एक घटना है, किसी से कुछ हो जाना केवल क्रिया है। चरित काव्य क्रिया का नहीं बल्कि कर्म का प्रबन्ध है। कर्म इच्छाशक्ति के चलते होता है। इच्छाशक्ति को सक्रिय करता है और कोई भाव ही शील की चरित की आधार शिला है। चरित काव्य का नायक मोक्ष पुरूषार्थ को प्राप्त करने का प्रयास करता है। उसकी समस्त भाव शक्ति अपने लक्ष्य की ओर प्रवृत्त रहती है।

वंशरेतस परम्परा के चलते— माता, पिता, पूर्वज

Scanned with CamScanner

परिवार के रक्त सम्बन्ध आदि के कारण कभी-कभी चरित्रों में विकृतियाँ दिखलायी पड़ती है। जिसके परिणाम स्वरूप काव्य का सार आत्यन्तिक द्वंद्व की शाश्वत और व्यापक महिमा का हो जाता है। इस कोटि के चरित काव्य भी प्राकृत साहित्य में उपलब्ध है।

चरित काव्यों में प्रबन्ध का प्रारूपों का विवेचन -

(I) मनः प्रधान प्रबन्ध → जहाँ चरित मन की ग्रन्थियों शैशव की दमित वासनाओं बाधित रति-चेष्टाओं चेतनाओं के स्तरों या तलों स्थिरभूत दशाओं नाना विकल्पों आदि के आधार पर वैज्ञानिक कारण कार्य स्वरूप का विधान प्रस्तुत करते हैं। मनोवैज्ञानिक ऐसा चित्रण रहता है, जिससे चरित का उद्घाटन होता।

(II) चेतन-प्रधान → जहाँ चेतना की सरणि प्रस्तुत की जाती है और चेतना में उठने वाले क्षुद्र-क्षुद्र विचार धाराएँ विकारों के साथ स्वचालित शब्दावली में प्रस्तुत की जाती है। उपयोग की विशुद्धता का चरित के माध्यम से प्रकट होना चेतना प्रधान प्रबन्ध है

(III) जीव-परक - नायक या नायिका के यशवर्णन से सम्बद्ध होते है। घटनाओं और कार्यों का चयन, संगति और मर्यादा बहुधा एकपक्षीय रहती है। ऐसे चरितकाव्य प्रतीति कम उत्पन्न करते हैं, रीति से लगाते है, अलंकार और रूपकों के मोहजाल में खो जाते हैं अतिशयोक्ति से काम लेते है। विभावन गुण की अल्पता के कारण रस संचार की क्षमता कम रहती है।

(iv) जगत-परक-इस कोटि के चरित काव्यों में नायक का चरित तो व्याज या निमित्त रहता है, पर देश या युग का चित्रण प्रधान होता है। साहित्य विधाओं के विकास पर दृष्टिपात करने से ज्ञात होता है कि कथा, वर्णन एवं संचार विषयक मान्यताओं के अनन्तर ही चरितकाव्य का सृजन आरम्भ होता है।

Scanned with CamScanner